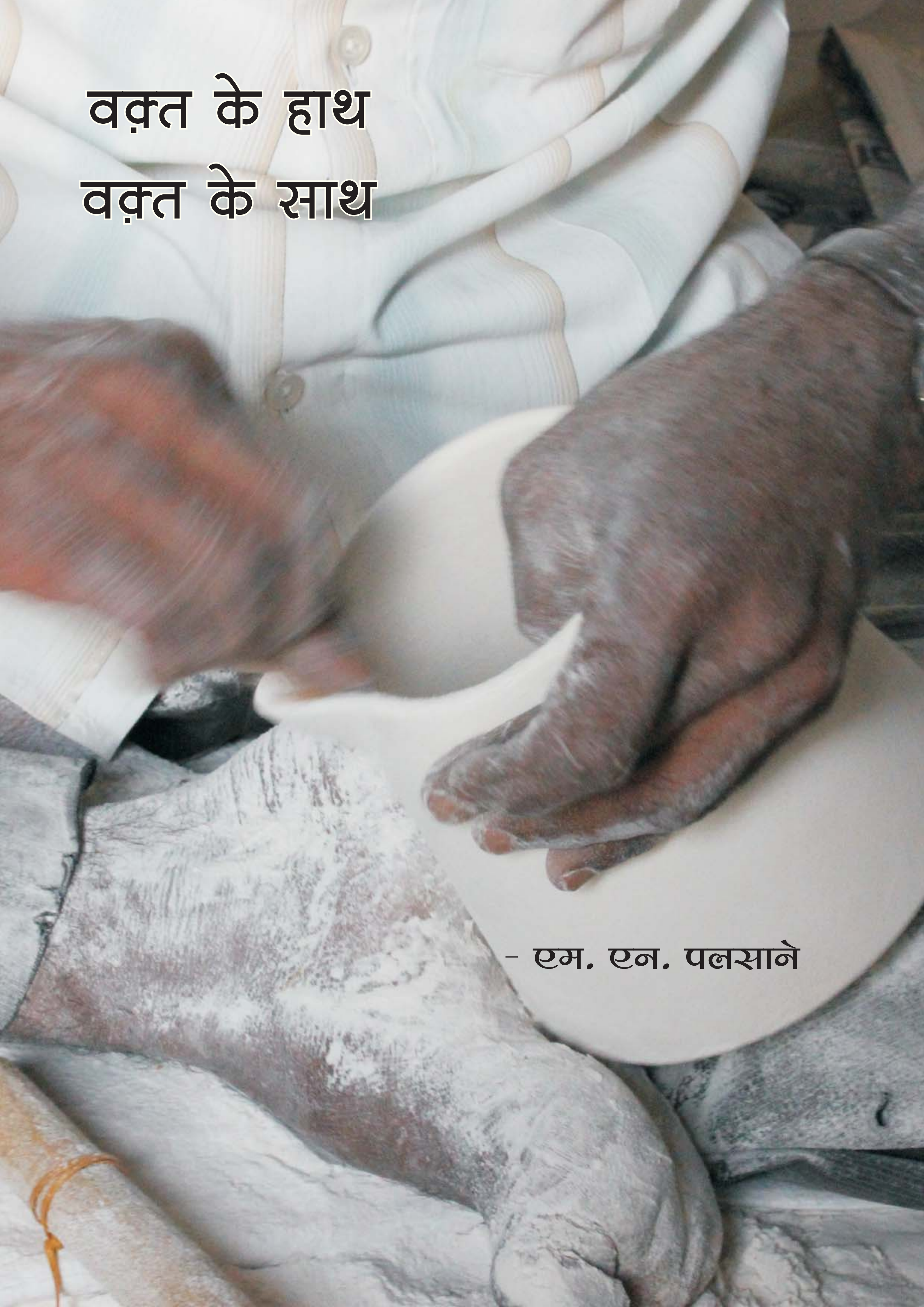

वक़्त के हाथ
वक़्त के साथ

– एम. एन. पलसाने

वक़्त के हाथ
वक़्त के साथ

- एम. एन. पलसाने

वक़्त के हाथ
वक़्त के साथ

© लेखक

2015 (For private circulation)

प्रकाशक
एम. एन. पलसाने
डी-4, फ्रेन्डस् पार्क
सेनापती बापट मार्ग
पुणे 411 016.
020-2563 8033
Email : mnpalsane@gmail.com

आवरण
नेहा, वंदना, एम. एन. पलसाने

मुद्रक
हेमंत मौर्य
इंप्रेशन्स
मॉडेल कॉलनी
पुणे 411 016.
020-2565 5965

Acknowledgements

For script correction
श्री. एन. डी. डागा
वंदना पलसाने

For Production
मुद्रक
प्रुफ रीडर्स

अर्पण (डेडिकेशन)

जिन्हों ने मेरी इस से पूर्व लिखी
रचनाएँ पढ़ी तथा मुझे
प्रोत्साहित किया
उन सब को...

समिधाच सख्या या,
त्यात कसा ओलावा,
कोठून फुलापरि वा
मकरंद मिळावा ?

– कुसुमाग्रज

This being fuel for sacred fire my friend,
devoid of any moisture,
how can you find fragrance
or nectar as you do in flower ?

Kusumagraj
Jnanpith Awardee, Marathi poet and writer

I

...

वक़्त की बात ही कुछ और होती है
गुज़रने का नाम ही वक़्त होता है
गुज़रा हुआ लमहा लौटकर नहीं आता
वक़्त, हर वक़्त नया होता है।

...

1

मैं जो कह रहा हूँ
पहले भी किसीने कहा होगा
मैं जो लिख रहा हूँ
पहले भी किसीने लिखा होगा
मैं जो देख रहा हूँ
पहले कइयों ने देखा होगा
मैं जो महसूस करता हूँ
पहले भी किया गया होगा
मैं जो जी रहा हूँ
यह कोई नई बात नहीं
क़ब्रगाह गवाह है सदियों से
लोग भी जीते ही रहे होंगे
रहगुज़र[1] जिस पे मैं चल रहा
वह कोई नई नहीं है
कई लोग उधर होकर गुज़रे
तभी तो वो रहगुज़र हुई होगी
फिर नई बात कोई
मेरे पास क्या होगी,
कभी–न–कभी हर बात
पुरानी भी हुई होगी
फिर भी अफ़साने दुहराए जाते हैं
दास्ताने बार–बार सुनाई जाती हैं
अंदाज़ और अल्फ़ाज़[2] कभी बदलते हैं
तो कभी वही रह जाते हैं।

1 Path
2 Alphabet, words

2

शब्द तू है, मैं नाद हूँ
अर्थ कितने, अनर्थ कितने
कोलाहल में रह जाता है तू ।

तिमिर तू है, मैं तेज हूँ
मेरी खोज में रहता है तू
मेरे दिखने पर, ग़ायब हो जाता है तू ।

बादल तू है, मैं अंतराल हूँ
न तेरा कोई पथ है, न कोई तेरी गति
हवा के साथ-साथ, बहता है तू ।

चंचल तू है, मैं अचल हूँ
खिलते फूल हैं, और उड़ता है तू
ऐसा कोई ठिकाना है, जहाँ कभी रुकता है तू ?

तू कहाँ है, मैं यहाँ हूँ
अपना पता नहीं तुझको, मुझको ढूँढ़ा करता है तू
खोया-खोया सा अपने को ही, ढूँढ़ता रहता है तू ।

❖

3

हम अब ख़ुद के क़रीब आ रहे हैं
हमें अब तुम कहीं और न ले जाओ।

हम अपने को अब पहचानने लगे हैं
हमें अब तुम कुछ कहके न बहकाओ।

दुनिया देखकर ही हम अब लौटे हैं
कोई नए नज़ारे न हम को अब दिखलाओ।

सब से निपटकर ही हम यहाँ तक आए हैं
दोस्तों को हमारे और दुश्मन न बनाओ।

तनहाई[1] ही अब जाकर मुक़द्दर[2] बन गई है
तनहाई रास आने दो, शोर तुम न मचाओ।

सफ़र अब इसी तरह हम ख़त्म करेंगे
हो सके तो इसी बहाने जश्न तुम मनाओ।

1 Solitude
2 Fate

4

तालीम जब होती है
वो ज़माना अलग होता है
जब हयात[1] चलने लगती है
तो ज़मीं बदल जाती है।
चलना भी सीखते हैं
चारदीवारी में फर्श पर
दुनिया में क़दम रखते हैं
राह पथरीली होती है।
रस्मो-रिवाज़ सीखे जाते हैं
बुज़ुर्गों के इशारे पर
बुज़ुर्ग वहाँ नहीं होते
जब अपना समय आता है।
सिलसिला ये तालीम का
सदियों से चला आया
किसी की हयात में वो
किसी के काम नहीं आया।
तालीम देनेवाले, तालीम की किताबें
सिर्फ़ बुत[2] बनकर रह गए
जो इन से बच गए
वो आगे निकल गए।

1 Life
2 Statue, idols

5

आदमी को सुकून[1] कब महसूस होता है ?
जब महफ़ूज़[2] ख़ुद को सभी तरह से पाता है।
ख़ुद ही ख़ुद के पास होता है
किसी बात का दख़ल नहीं होता।
अकेलापन हो तो अफ़सोस नहीं होता
किसी की ज़रूरत महसूस नहीं करता।
दिमाग़ को परेशान करनेवाला घुन[3]
आसपास कहीं दिखाई नहीं देता।
पार्श्वभूमि में संगीत या नृत्य महोत्सव हो
तो और जन्नत का ख़याल नहीं आता।
न आरज़ू ख़ुद की, न उम्मीद किसी से
सब चाँद-सूरज की गति से अपने आप होता।
हालात ऐसे आते तो हैं ज़िन्दगी में
पर आदमी इन लम्हों[4] को पहचान नहीं पाता।

1 Peace
2 Secure
3 Borer insect
4 Moments

6

दिमाग़–ओ–अक़्ल की तारीकियों[1] से गुज़र
तब जाकर मंज़िल दिखेगी, रास्ता दिखेगा ।

इस शहर से गुज़र, गाँव की ओर चल
आदमी मिलेंगे, हमदर्दी मिलेगी ।

आँखे खोल, देख चारों ओर, सुन सब,
महफ़िल दिखेगी, मक़सद[2] मिलेगा ।

दीवाना बन के मक़सद लिए चल
दीवानगी बुरी बात नहीं, आरज़ू[3] मुकम्मल[4] होगी ।

हादसे तो होते ही रहते हैं दुनिया में हर दिन
देखता रह अगर हो जाए तेरे साथ, राहत भी मिलेगी ।

अँधेरे तो होते ही हैं हर रोज़ दुनिया में
ख़्वाब देखता रह, अँधेरे के बाद सहर[5] भी होगी।

दुनिया की हर शै[6], इसी राह होकर गुज़रती है
तू कौन सी तोप है जो तेरी ज़िन्दगी अलग होगी ।

1 Darkness
2 Purpose
3 Desire
4 Fulfilment
5 Dawn
6 Thing

7

अँधेरों में रहने वाले
उजाले भूल जाते हैं

सफ़र में रहने वाले
अक्सर रुकना भूल जाते हैं

महफ़िलें सजानेवाले
घर भी भूल जाते हैं

जमघटों में रहनेवाले
अपनों को भूल जाते हैं

ख़ुद में खोनेवाले
दुनिया भूल जाते हैं

दुनिया में खोनेवाले
ख़ुद को भूल जाते हैं ।

8

हर कली फूल बन मुरझा जाती है
ये मौसम अपने आप को बहार कहता है।

नहरें सूखी हैं, तालाब सूखे हैं
पानी की तलाश में है, अपने को बादल कहता है।

मेले लगते हैं, दर्शन को भीड़ उमड़ती है
भगदड़ को बचा नहीं पाता, अपने को भगवान कहता है।

कचहरी के चक्कर काटते आदमी गुज़र जाता है
इस देस का क़ानून इसे इन्साफ़ कहता है।

न तो मरने देता है, न ही ठीक करता है
ये अपने आप को चारागर[1] कहता है।

जिस पर चलते हर क़दम रुकना पडता है
शहर में ये अपने को रहे–आम[2] कहता है।

शोर और उजाले जब हद से गुज़र जाते हैं
शहर का आदमी इसे रात कहता है।

हर मौज[3] यहाँ आकर बिखर जाती है
यह अपने आप को किनारा कहता है।

1 Doctor
2 Main road
3 Wave

9

उँची पहाड़ियों से लुढ़कता हुआ
यहाँ आकर मैं रुक गया
चारों तरफ़ पहाड़ी थी
मैं तालाब बन के रह गया।

वो बात कुछ और थी
जब मैं उछलता-कूदता रहा
टकराता - बिखरता रहा
रुका नहीं, चलता ही रहा।

अब भी निशान मौजूद हैं
जिस रास्ते मैं गुज़रा था
कहीं टूट कर वो बिखर गए
कहीं टूट कर मैं बिखर गया।

रुकना तब मुमकिन नहीं था
चलना अब मुमकिन नहीं
सफ़र ख़त्म कहीं होता ही है
अफ़सोस की कोई वजह नहीं।

10

इन्तज़ार था तुम्हारे आने का
और तुम आ भी गए
पर मेरे ऐ दोस्त, इन्तज़ार
तो इन्तज़ार ही रह गया।

ख़्वाहिशें[1] होती ही हैं ऐसी
न ही अधूरी रहती हैं, और
न ही कभी पूरी होती हैं
ख़्वाहिशें, ख़्वाहिशें ही होती हैं ।

इन्हें लेकर ही आदमी पैदा हुआ था
इन्हीं की गोद में वो पला था
उम्र का नाम ही ख़्वाहिश होता है
इन के बगैर ज़िन्दगी भी क्या है ?

आदमी तो क्या, ख़ुदा भी बेज़ार है
कुछ अपने लिए रख लेता है
कुछ दुनिया के नाम लिख देता है
ख़्वाहिशों का नाम ही दुनिया है ।

1 Desires

11

कोशिशें सभी कर चुके
        अंजाम[1] ही तो बाक़ी है ।

राहें सभी गुज़ार चुके
        मंज़िल ही तो बाक़ी है ।

मुलाक़ातें कई हो चुकी
        दोस्ती ही तो बाक़ी है ।

कई हदों से हम गुज़र चुके
        इल्ज़ाम[2] ही तो बाक़ी है ।

राह देखते देखते थक गए
        इन्तज़ार ही तो बाक़ी है ।

इलाज अपने सब करा लिए
        अब मर्ज़[3] ही तो बाक़ी है ।

दिल की धड़कने ख़ामख़्वाह बढ़ती हैं
        दिल को समझाना बाक़ी है ।

सरकस के करतब सभी कर चुके
        सिर्फ़ जोकर बनना बाक़ी है ।

जनाज़े[4] मे हम शरीक़ थे
        क़ब्र में उतरना बाक़ी है ।

1 Result
2 Accusation
3 Disease
4 Funeral procession

12

मंज़िल तो कोई थी ही नहीं
मैं क्यों चल पड़ा, पता नहीं।

छलाँग तो कुए में लगाई थी
गहरा कितना गया, पता नहीं।

ठोकर तो कोई खाई थी नहीं
मैं क्यों गिर पड़ा, पता नहीं ।

रास्ता तो सीधा ही था, पर
मैं क्यों भटक गया, पता नहीं ।

पेड़ के नीचे मैं बैठा था
क्यों रुका हुआ था, पता नहीं ।

काम तो कुछ था नहीं
मैं क्या कर रहा था, पता नहीं।

अलविदा सभी कर चुके थे
मैं क्यों गया नहीं, पता नहीं ।

13

क़रीब हैं फिर भी फ़ासले
कम होते क्यूँ नहीं ?
कहने को बहुत कुछ है पर
कहते क्यूँ नहीं ?
खोए से नज़र आते हैं फिर भी
तलाश क्यूँ नहीं ?
रास्ते पे खड़े नज़र आते हैं वो
आगे चलते क्यूँ नहीं ?
दुनिया बहुत बदल गई है, देखकर
समझते क्यूँ नहीं ?
जीनेके लिए कोई मक़्सद[1] चाहिए
ढूँढ़ते क्यूँ नहीं ?
साहिल[2] से टकराने से बेहतर, पानी में
कूदते क्यूँ नहीं ?
सवाल ही सवाल किए जा रहे हो
जवाब मिलते क्यूँ नहीं ?

1 Purpose
2 Bank

14

पैदा हुए थे, ज़िन्दगी भी गुज़र गई
कैसे गुज़र हुई, ये सोच जारी है।

जहाँ में निकले तब कुछ भी नहीं था
ये सब कहाँ से आया, तलाश जारी है।

मिलने को तो बहुतेरे मिले थे
कोई कहाँ गया, अब ढूँढ़ना जारी है।

कभी हम नहीं मिले, कभी दिल नहीं मिला
जो कुछ भी हुआ, अफ़सोस जारी है।

ज़िन्दा तो हैं अब भी, हयात बाक़ी है,
कोई ख़याल क्यों नहीं, जाँच जारी है।

जैसे भी जी गए, ये भी कोई ज़िन्दगी थी
ग़म कोई नहीं है, फिर भी जंगे-जिरह[1] जारी है।

कमान[2] टूट गई, तीर बच गए
तरकश[3] का क्या होगा, ये फ़िक्र जारी है।

सफ़र ख़त्म हो रहा, कोई मंज़िल नज़र में नहीं
फिर भी किसी आरज़ू की खोज जारी है।

सितमगर[4] ज़िन्दगी में जो भी नसीब हुए
इत्तेफ़ाक़[5] उन से आज भी जारी है।

1 Debate
2 Bow
3 Quiver
4 Harassers
5 Meeting, encounter

15

अजीब बात है यारों, इस शहर में
तुम कहीं आदमी ढूँढ़ रहे हो ।

भरी पड़ी है हर जगह यहाँ किताबों से
तुम कहीं मतलब ढूँढ़ रहे हो ।

सैलाब[1] गाड़ियों के बह रहे हैं सभी रास्तों पर
तुम अपने लिए रास्ता ढूँढ़ रहे हो ।

मैकदा[2] है, साक़ी है, मै[3] है, महफ़िल है
तुम साग़र[4] ढूँढ़ रहे हो ।

भीड़ तो है, पर सब तनहा[5] लोगों की है,
तुम इस में साथी ढूँढ़ रहे हो ।

भरी पड़ी है यह नगरी सभी जानकारों से
तुम कोई ज्ञानी ढूँढ़ रहे हो ।

देख रहे हो चारों तरफ़ क्या क्या पड़ा हुआ है
तुम कोई साफ़ गली ढूँढ़ रहे हो ।

रोज धुलते है गराज और गाड़ियाँ साफ़ पानी से
तुम पीनेको पानी ढूँढ़ रहे हो ।

आए तो थे यहाँ कई इरादे लिए हुए
तुम अपना खोया मक़्सद[6] ढूँढ़ रहे हो ।

1 Flood
2 Bar
3 Wine
4 Wine-glass
5 Lonely
6 Purpose

16

ख़िज़ाँ[1] में फूलों की ख़ुशबुओं को
ढूँढ़ा नहीं करते ।

कटी हुई शाख़ों पर नशेमन[2]
ढूँढ़ा नहीं करते ।

शहर की सभी राहों पर मशीनों का पहरा है
शहर के माहौल में आदमियत ढूँढ़ा नहीं करते ।

सच–झूठ का कोई पैमाना नहीं है फिर भी
सियासत[3] के कारोबारियों में ईमान ढूँढ़ा नहीं करते ।

कई कामों में ख़िताबों[4] का चर्चा होता है
ख़िताबें पानेवालों की असलीयत ढूँढ़ा नहीं करते ।

मज़हब[5] के चर्चे गरमागरम होते हैं
किताबों के साए में ख़ुदा ढूँढ़ा नहीं करते ।

1 Fall
2 Nests
3 Politics
4 Awards
5 Religion

17

कुछ भारतीय खेलों के बारे में
जब मैं गहराई से सोचता हूँ
मैं उलझन में इस रहता हूँ
इन्हें किसलिए ईजाद[1] किया होगा।
आँखमिचौनी[2], कबड्डी, खोखो
ये मेरे चिन्तन के विषय
बन गए हैं, और
चिन्ता के भी।
बॉक्सर की तरह
आमने–सामने डटकर
मुक़ाबला करने के बजाय, कोई
छिप जाना क्यों पसंद करता है ?
एक आक्रमणकारी को
चारों तरफ़ से सब घेर लेते हैं
उसका दम निकलते निकलते
उसकी टाँग खींच लेते हैं।
खोखो भी अजीब खेल है
थोड़ा दौड़ लेते हैं पकड़ने को
और आगेका काम
दूसरे को सौंप देते हैं।
मेरे ख़याल से खेलों की
चरित्र निर्माण में भूमिका है
भारतियों के चरित्र में
इन खेलों का प्रतिबिम्ब दिखता है
सभी क्षेत्रों में, सभी स्तर पर।

1 Invent
2 Hide and seek

18

लोगों की ग़लतियाँ ठीक करते–करते
ज़िंन्दगी गुज़र गई
काम कुछ मुश्किल ही था
कुछ लोगों की कुछ–कुछ
ठीक हुई होगी
पता चलना भी
मुश्किल ही था
ख़ैर जो भी हुआ हो
कामयाब समझे गए
वैसे भी अपने देस में
तीस–चालीस प्रतिशत में
कामयाबी हासिल हो जाती है
एक बात लेकिन
बहुत देर बाद समझ में आई
लोगों की ग़लतियाँ
ठीक करनेका काम
इतना भारी था
अपनी ठीक करने के लिए
वक़्त ही नहीं मिला।

19

हर समय साथ चलनेवाला
हमदम कभी मिलता नहीं
कोई रास्ता बदल देता है
कोई हमदम बदल देता है ।

रास्ता सभी का एक होता नहीं
मंज़िलें सभी को साथ मिलती नहीं
सभी आगे-पीछे चले चलते हैं
कोई साथ चल कर बिछड़ जाते हैं ।

क्या मंज़िलों का होना ज़रूरी है ?
क्या रास्तों का होना ज़रूरी है ?
मंज़िलों का रास्ते से रिश्ता ज़रूरी है ?
क्या रास्ते ही मंज़िलें नहीं होती ?

साथ चलना भी एक रास्ता होता है
साथ चलना भी एक मंज़िल होती है
साथ बदलना भी एक रास्ता होता है
साथ कुछ होना ही ज़िन्दगी होती है ।

20

अर्थ न जाने कहाँ खो गए
कितने बदल गए
जो मैं जानता हूँ
पता नहीं
मिलेंगे भी या नहीं।

फिर भी शब्द ढूँढ़ रहा हूँ
पुराने आसानी से मिलते नहीं
नयों का मतलब पता नहीं
कई बार कुछ होता भी नहीं।

मैं उस ज़माने से हूँ
जब अर्थ बातों में होते थे
अर्थ गीतों में होते थे
सुनने पर अच्छे लगते थे।

वो धनी शब्द दिवालिया हो गए
या तो कोलाहल में खो गए
अर्थ, जो शब्दों के परे होते थे
अब वो कहीं मिलते नहीं।

21

लोग मेरे भविष्य की बातें
आज ही मुझे सौंपने की
बात करते हैं
अच्छा लगता है सुन कर...

फिर कुछ देर से
ख़याल आता है...
लेकिन मेरे भविष्य में
फिर क्या रहेगा ?

और कुछ देर सोचता हूँ
मेरे वर्तमान के बारे में
भविष्य अगर आज जीऊँगा
तो फिर वर्तमान का क्या होगा ?

बड़े अजीब सपने दिखाते हैं
ये इश्तेहार[1] वाले
कुछ अपना बेचने के बहाने
लोगों का वर्तमान
छीन लेते हैं
और तो और
भूतकाल को तहस-नहस
कर देते हैं ।

1 Advertisement

22

किसी सही काम का हो जाना
यकायक[1] नहीं हुआ करता
डार्विन से पूछ कर देखिए
कितना समय लगता है।
सेब (Apple) की ही बात लीजिए
इव्हने इसका प्रयोग किया
क्या यह संभव है
यह इत्तफ़ाक़[2] हुआ होगा ?
मेरे ख़याल से यह मुआमला
काफ़ी समय तक ज़िन्दा रहा होगा।
न्यूटन की बात समझिए
उसने भी सेब की बात कही
पर क्या सेब के गिरते ही
वह मशहूर हुआ होगा
शायद पहले से वह सोच रहा होगा
और बाद में भी...
स्टीव जॉब्ज़ ने भी ॲपल बनाया
शुरूआत करने में भी समय लगा होगा
और उसके जाने के बाद भी
उसका बनना, बिगड़ना चल रहा है।
बनने पर या पूरी होने पर
बात ख़त्म हो जाती है
बनने के इन्तेज़ार में ही
ज़िन्दगी होती है।

1 All of a sudden
2 Accidental happening

23

गंगा–जमुना इतनी मैली हो गई
काफ़िरों के ख़ुदा भी नई पनाह ढूँढ़े हैं ।

गाँव अब रहने लायक किसी को लगता नहीं
शहर जाकर आदमी, आदमी को ढूँढ़े है ।

शहर में काम का कोई समय नहीं रह गया
खोया–खोया सा आदमी सुबह–शाम ढूँढ़े है ।

रिश्ते तो कबके ही खो गए लेन–देन में
रिश्तों मे आदमी फायदा कितना ये ढूँढ़े है ।

नई जगह आदमी को बीमारियों के अहसास होते हैं
जो नहीं है उन बीमारियों की दवा ढूँढ़े है ।

बेचैनियाँ, बीमारियाँ, परेशानियाँ सिर्फ़ दिमाग़ी
दवाएँ काम करती नहीं, कोई बाबा–बापू ढूँढ़े है ।

बेचैन सा हर शख़्स किसी जगह रुकता नहीं
कहीं टिकने से पहले ही कोई नई जगह ढूँढ़े है ।

दुनिया के बदलते मंज़र[1] में सब चक्कर काट रहे हैं
रुक कर साँस लेने को कोई ठिकाना भर ढूँढ़े हैं ।

1 Scenario

24

लोग सीखते थे जब कोई किताब नहीं थी
लोग सीखते थे जब सिखानेवाले नहीं थे
लोग सीखते थे जब ज्ञानी मुनी नहीं थे
लोग सीखते थे जब कोई आश्रम नहीं थे
लोग सीखते थे जब पाठशालाएँ नहीं थी
सीखने की जब कोई व्यवस्था ही नहीं थी ।
किताबें तो क्या, भाषा भी नहीं थी ।
लिखना तो क्या, बोलना भी नहीं था ।
भूल चुके हैं लोग ऐसा भी कोई दौर था
जब आदमी, आदमी से इशारों में बात करता था ।
बोलने के लिए उसने शब्द बनाना सीखा
लिखने के लिए उसने संकेत चिन्ह बनाए
जो कुछ भी सीखा उसे याद करना सीखा
याददाश्त के लिए ज़रूरी शब्दरचना सीखी
मंत्र बने, किताबें बनी, ज्ञानसंचय हुआ
सीखानेवाले बने, उनके आश्रम बने
बहुत कुछ होते हुए व्यवस्था कायम हुई ।
अब सब कुछ है इस व्यवस्था में
भाषाएँ हैं, किताबें हैं, संस्थाएँ हैं,
आश्रम ही नहीं, विद्यालय और विद्यापीठ हैं
शिक्षक ही नहीं, अधिष्ठाता और कुलगुरु हैं
सिर्फ़ कमी रह गई है सही सीखनेवालों की
जब की पढ़ाने को सब तैय्यार बैठे हैं ।

25

करते रहिए वो सब बातें
जो अब तक करते आए हैं
किस वजह आप ज़िन्दा हैं
आपको क्या मालूम ।

चलते रहिए उन्हीं सब राहों पर
जिन पर चलते आए हैं
कौन राह मंज़िल तक जाती है
आपको क्या मालूम ।

मिलते रहिए उन सभी से
जिनसे मिलते आए हैं
दोस्तों में भी दुश्मन होते हैं
आपको क्या मालूम ।

दुनियावाले कुछ कुछ कहते होंगे
आप अपनी ही करते होंगे
कौन सही और कौन ग़लत
आपको क्या मालूम ।

इसी तरह दुनिया में चलते
कहीं न कहीं पहुँच ही जाओगे
मंज़िल पीछे कब छूट गई
आपको क्या मालूम ।

❖

26

दुनिया में सुबह होती है
उसी दिन शाम भी होती है
ज़िन्दगी कॅलेंडर में बंधी होती है
और दुनिया को बाँध कर चलाती है ।

आज मैं कॅलेंडर से आज़ाद हो गया
मैं सोता हूँ तब रात होती है
उठता हूँ तब सुबह होती है
पढ़ता हूँ या टहलता हूँ
तब फुरसत हुआ करती है ।

मेरा घड़ी से कोई वास्ता नहीं
सुबह-शाम कुदरत का खेल है
मुझे अब इस से क्या लेना-देना है
मेरा दिन मेरे हिसाब से चलता है ।

वैसे भी दुनिया में होता आया है
किसी की शाम किसी की सुबह होती है
दुनिया जिसको रात कहती है
उस में भी कई काम करते हैं ।

पंचांग के बंधन से छुटकारा
लोग सोच भी नहीं सकते
पर सोचने की यह बात है
ऐसा समय भी ज़िन्दगी में
किसी तबक़्क़े[1] पर आ जाता है ।

1 Stage

27

लोग फ़िज़ूल फ़िक्र करते हैं
लोग अचरज भी करते हैं
जब वे देखते हैं की
आदमी अकेला कैसे रहता है।

घबराते हैं लोग अकेलेपन से
अकेलेपन के अहसास से भी
लोगों के साए में रहने की आदत
आदमी को जंगल से डरा देती है।

अकेला रहना एक बात होती है
अकेलापन महसूस होना, दूसरी होती है
अकेला आदमी अकेलापन महसूस करे
यह कोई ज़रूरी नहीं होता।

साए लोगों के होते हैं
साए पेड़ों के होते हैं
साए कई तरह के होते हैं
बगैर साए के भी लोग रहते हैं।

साए के लिए लोग छत बनाते हैं
छत भी कई तरह के होते हैं
अकेला आदमी भी यही करता है
अपने क़ाबिल छत बना लेता है।

28

कोई कहता है तरीक़े बदल गए
कोई कहता है आदमी बदल गए
कोई कहता है वक़्त बदल गया
जो भी कहा गया, नया क्या कहा गया ?

तरीक़े बदलते ही आए हैं ज़माने से
अँधेरे-उजाले पहले भी हुआ करते थे
अँधेरे मे शम्‌अ जलाया करते थे
शम्‌अ अब बिजली में बदल गई ।

आदमी, आदमी का काम किया करते थे
और औरतें थी घर सँभालने के लिए
अब औरतें आदमी का काम करती हैं
और आदमी घर सँभालते नज़र आते हैं ।

वक़्त की बात ही कुछ और होती है
गुज़रने का नाम ही वक़्त होता है
गुज़रा हुआ लमहा लौटकर नहीं आता
वक़्त, हर वक़्त नया होता है ।

आदमी है, ज़िन्दगी है, क़ुदरत है
दरिया का बहता हुआ पानी है
पीछे मुड़ने की गुंजाइश नहीं होती
अगले पल को बदल कर ही चलते हैं ।

29

ख़ुशनुमा इक गीत गाओ
मैं बड़े सदमे में हूँ।

मुश्किलें लगती हैं कुछ बड़ी
मैं बड़ी उलझन में हूँ।

कोई मेरे अब काम आता
मैं किसी की तलाश में हूँ।

दुश्मन भी काम आते रहे हैं
मैं इसी उम्मीद में हूँ।

वैसे तो मैं ही निपटता रहा हूँ
इस वक़्त पर मैं हैरत में हूँ।

पड़ाव सभी गुज़ार दिए हैं
आख़िरी पड़ाव पै थकान में हूँ।

आसपास कोई नज़र नहीं आता
फिर भी ढूँढ़ने की फ़िक्र में हूँ।

दो क़दम तुम साथ हो लो
ये समझो के मैं बड़ी मुश्किल में हूँ।

30

आज नहीं करोगे तो कब करोगे
कल की राह कब तक देखोगे
किसी की ज़िन्दगी में आज तक
देखा है कल को आते हुए
रात होती है, फिर सुबह होती है
कल की शुरुआत कहाँ होती है
आज के बाद फिर आज ही आता है
आज का कल, कल को आज हो जाता है
अजीब होती है ये समय की दास्तान
दुनिया गोल है, सिरा मिलता नहीं है
बीता हुआ कल और आनेवाला कल
इन से तुम्हारा क्या वास्ता
एक हाथ से निकल गया
दूसरा हाथ आना नहीं है
आज का ही एहतिराम करो
सुबह से लेकर रात तक
जो लेना है, ज़्यादा से ज़्यादा ले लो
जो करना है, ज़्यादा से ज़्यादा कर लो
यह भी चला ही जाएगा
पता नहीं कल कब आएगा,
आएगा भी या नहीं !

31

हमने अपने-आप को क़त्ल क्यों किया
वैसे ख़ुदकुशी[1] करने की ज़रूरत नहीं थी।

हम उनके पीछे थे और उन्होंने मना किया
ये तो होना ही था, दूसरा ढूँढ़ने की ज़रूरत थी।

मंज़िलें सब सामने से गुज़रती रही
मंज़िलों का क्या, बस राह चलने की ज़रूरत थी।

हादसे[2] तो दुनिया में सब के साथ होते हैं
हादसों के साथ-साथ चलने की ज़रूरत थी।

दुनिया की हर ख़ूबसूरत चीज़ मिला करती नहीं
दूरियाँ बरक़रार रख, बस देखने की ज़रूरत थी।

तज़रबा[3] न होने पर ग़लतियाँ हो जाती हैं।
तज़रबेकार ढूँढ़कर उन से सीखने की ज़रूरत थी।

उम्र हमारी मरने लायक थी भी नहीं
कहीं जाकर ज़िन्दगी ढूँढ़ने की ज़रूरत थी।

1 Suicide
2 Calamities
3 Experience

32

सही–ग़लत
सच–झूठ
आदमी खो जाता है
इन लफ़्ज़ों[1] के बीच
निकल पड़ता है
नमूने ढूँढ़ने
ज़्यादातर मिलते हैं
इन सिरों के बीच
लटकते हुए
लौट आता है
उलझन में पड़ा
खोजने लगता है
इन लफ़्ज़ों के
अर्थ दोबारा।

1 Words

33

मंज़िलों की ओर चलते
        मंज़िलें बदलनेवाले
राह चलते-चलते
        राहें बदलनेवाले
अकेले चलना मुश्किल
        फिर भी हमसफ़र[1] बदलनेवाले
अँधेरे में अगर चलना पड़े
        घबराहट होनेवाले
थकने से पहले ही चलते-चलते
        सरायें[2] ढूँढ़नेवाले
उलझनों में पड़ते हुए
        मंज़िलें ही भूलनेवाले
पता मंज़िलों का ढूँढ़ते
        राहें भूलनेवाले
इसी तरह चलते हैं ज़्यादातर
        किसी राह चलनेवाले ।

1 Co-traveller
2 Inn

34

भूली हुई बातें
कभी फिर
याद आती हैं
याददाश्त[1] भी होता है
इक मियादी[2] डिब्बा
भरनेपर छलकना
वाजिब[3] होता है
भूलना ज़रूरी होता है
ज़िन्दगी में कुछ लम्हे[4]
याद के क़ाबिल होते हैं
सभी कचड़ा
सँभाल के रखा नहीं जाता
कुछ ज़ख़्म के निशान
पर मिटते नहीं हैं
ज़ख़्म भरने पर भी
निशान पीछे
दिखाई देते हैं
निशान का क्या
ऐसे तो निशाँ
कई होते हैं
ज़ख़्म हरे नहीं रहे
यही क्या कम है।

1 Memory
2 Limited
3 Appropriate
4 Moments

35

बात दरिया[1] के साथ
साहिल[2] की होती रहती है
रुख़ कभी साहिल का होता है
तो कभी मँझधार[3] का रहता है।

कश्ती का आना जाना
दरिया और साहिल के बीच
चलता रहता है
अजीब इस में कुछ नहीं लगता।

कहानियों में, नग्मों[4] में
दरिया और साहिल का ज़िक्र
अक्सर ही आता रहता है
रिश्ता इनका कुछ नया नहीं लगता।

एक बात पर कोई नहीं पूछता
न ही कोई बात ये समझता
कैसे एक दरिया
दो दो साहिल से निपटता है ?

1 River
2 Bank
3 Midstream
4 Songs

36

रात सोने के लिए होती है
सुबह का इंतज़ार करने के लिए नहीं

रात सोने के लिए होती है
दिन के कामों का हिसाब करने के लिए नहीं

रात सोने के लिए होती है
करवटें बदलने के लिए नहीं

रात सोने के लिए होती है
पहरा देने के लिए नहीं

रात सोने के लिए होती है
दिख जाए तो, ख़्वाब देखने के लिए सही।

37

न कारवाँ[1] है, न हमसफ़र[2] है
न मंज़िल है, न राह कोई
भटकने की भी कोई
न जगह है, न वजह है
सफ़र ख़त्म हो जाते हैं
क़दम पर रुकते नहीं
इन पहियों के रुकने का
इंतज़ाम होना चाहिए
मक़ाम आते ही इन को वहीं
रुक जाना चाहिए।

1 Caravan
2 Co-traveller

38

ज़िन्दगी में अगर गुल की
ख़ुशबू से वाक़या[1] न हुआ
न ख़ार[2] में दामन उलझा
न चुभन महसूस किया
तो फिर तुम कहाँ से गुज़रे
ऐसी रहगुज़र[3] जिस पर
ज़िन्दगी का कोई ज़िन्दा
निशाँ नहीं मिला ?

1 Encounter
2 Thorn
3 Path

39

हर हाल में अपने
दिल को सँभाल लेना
धोखे से कभी कहीं
ठेस पहुँच जाती है।

हर हाल में अपने
दिल को ख़ुश रखना
ग़म की घटा कभी
छा जाती है।

हर हाल में अपने
दिल पर क़ाबू रखना
धड़कन दिल की कभी
बढ़ जाती है।

हर हाल में अपने
दिल को समझा देना
दिमाग़ की भी ज़रूरत
हुआ करती है।

40

दुनिया में कब कोई
किसी और का होता है
आख़िर चल के हर कोई
अपना–अपना ही हुआ करता है ।

ज़माने में हर कोई
कइयों के साथ चला करता है
देखनेवाले को मगर हर शख़्स[1]
ख़ुद के साथ ही नज़र आता है ।

तसवीर ज़माने की बनाने के लिए
सब साथ दिखाए जाते हैं
जब समय आता है तब ज़माना
कहाँ किसी के साथ होता है ?

1 Person

II

वक़्त ही तो क़ातिल (assassin) था मेरा
वरना मेरी ज़िन्दगी तमाम (end) होती क्यों ?

उम्र गुज़र गई मेरी
बस तारीफ़ ही सुनते सुनते
आख़िर कोई तो बताए
के असली हक़ीक़त भी क्या है।

❖

आसाँ और मुश्किल ये लफ़्ज़ आदमी के हैं
कुदरत में दूसरा कोई ऐसा समझता नहीं।

❖

एक दिन इत्तेफ़ाक़न[1] मुलाक़ात हमारी
अपने आप से हो गई
हर कोई अपने-अपने बारे में
सब कुछ जानता तो है ही
फिर भी हमने पूछ ही लिया
कहाँ जा रहे हो ?

1 Accidentally

❖

कोई अच्छी और क़ीमती चीज़
मेरे पास कभी होती है
मैं उसे कल के लिए
सँभाल के रख देता हूँ
वो कल कभी नज़र
आता ही नहीं
और मैं ज़िन्दगी मुफ़लिसी[1] में ही
गुज़ार देता हूँ।

1 Poverty

—❖—

इस ज़िन्दगी को भटकने दो, बेसम्त[1] ही सही
इस दरिया को समंदर मिलेगा कहीं न कहीं।

1 Directionless

—❖—

न जाने किस की राह देख रहा हूँ
तख़्ती लिए किसी टर्मिनल पै खड़ा हूँ
तख़्ती पै नाम किसी का नहीं है
शायद कोई आ जाए जिसका कोई नहीं है।

—❖—

रंग तो फीके पड़ने हैं
हर शै[1] के इस दुनिया में
हर रंग का एहतिराम[2]
करना लाज़िम[3] है ।

1 Thing
2 Respect
3 Appropriate

ख़ुशियों की बारात नहीं आती
ख़ुशियों का म्युज़ियम होता है
चुन-चुनकर एक-एक लमहा
सँभालकर संजोया जाता है ।

साहिल[1] ही अगर मंज़िल होती
तो दरिया[2] यहीं रुक गया होता
किनारे से किनारा करते हुए
वो तो आगे-आगे चलता है ।

1 Bank
2 River

ऐ ज़िन्दगी, तू ठहर जा
मुझे गुज़र जाने दे
तू रास्ता, मैं मंज़िल
मुझे पहुँच जाने दे।

❖

मुश्किलों के दौर से गुज़रना
अच्छा ही रहा कुछ हद तक
पहचानवालों की
पहचान हो गई।

❖

ऐ ख़ुदा तेरी दुनिया में
इतने नौटंकीवाले[1] क्यों हैं
इतने फ़रेबी[2] क्यों हैं
अच्छे इन्सान बनाना
मुश्किल तो होगा ही, पर
इतनी ग़लतियाँ करनेवाला भी
ख़ुदा बन सकता है,
बड़ी उम्मीद की बात है।

1 Actors
2 Pretenders

❖

कमान से छूटे सभी तीर
निशाने पर तो नहीं पहुँचते
फिर अफ़सोस किसलिए के
कोई ग़लत जगह लग गया ?

—❖—

कोई झुकता है तो उसे नीचा मत समझ लेना
वो अदब की उँचाई पर हो सकता है।

—❖—

एक शाम किसी के नाम करने से
किसी की उम्र कम नहीं होती
यादों की भी उम्र होती है
जो इसी तरह बढ़ती है।

—❖—

वक़्त की ही बात कर रहे हैं
हम लमहों[1] को वक़्त नहीं कहते
कारवाँओं का वो हुज़ूम[2] होता है
सैलाब[3] की तरह आकर गुज़र जाता है।

1 Moment
2 Gathering
3 Flood

—❖—

ठीकरा[1] एक टूट भी जाए तो क्या
अफ़सोस किस लिए, बना था टूटने के लिए
या तो टुकड़ो-टुकड़ों में याद रह जाएगा
या फिर खो जाएगा किन्हीं गहराइयों में।

1 Earthern pot

जो कुछ भी मयस्सर[1] हुआ
तेरी ही मर्ज़ी से हुआ
अगर कोई गुनाह भी किया
तो ज़िम्मादार मैं हरगिज़ नहीं।

1 Available

दरिया है ये, इसे
खुल के बहने दो
ज़िन्दगी है ये, इसे
वक़्त के हाथ
वक़्त के साथ
गुज़रने दो।

क्या आप से किसीने
कोई सवाल किया है ?
या फिर आप ही ख़ुद से
कोई सवाल कर रहे हैं ?
आप किस को सवाल का
जवाब दे रहे हैं ?
क्या अपने जवाब का
आप ख़ुद को यक़ीं है ?

अकेलेपन का ख़ौफ़[1] कैसे
अकेला ही तो आया था
साथ में कोई दिखा भी हो
अपने साथ मैं ख़ुद ही था ।

1 Fear

आदमी कई तरह के सीख़चों[1] में बंद रहता है
आदमी ख़ुद भी कई तरह के सीख़चें बना रहता है
क़फ़स[2] के सीख़चों की भी
क्या ज़िन्दगी होती है ?
गुनाहगार की सज़ा की भी
एक मियाद[3] होती है ।

1 Chain, Bars
2 Prison
3 Duratrion

नाख़ुदा[1], अगर सैलाब[2] आ जाए
बीच दरिया[3] में
भँवर[4] में ही छोड़ देना मुझे
उम्मीदों की उलझन में मैं
नाहक़ फँसना नहीं चाहता।

1 Boatman
2 Flood
3 River
4 Whirlpool

मैं इक दर्दे-दिल का हिजाब[1] हूँ
मैं इक दर्दे-दिल की किताब हूँ
तू हिजाब-ओ-किताब का ख़याल छोड़
मैं इक खोए वक़्त का शबाब[2] हूँ।

1 Veil
2 Brightness

गुनाहगार क़रार करने को
न ज़रूरत है अदालत की
या फिर काज़ी या गवाह की
बस आईना ही काफ़ी है इसके लिए।

धूप भी मयस्सर होती रही
ज़िन्दगी में बार–बार
मौसम मगर वो गर्मी के थे,
सर्दी के नहीं।

——❖——

शम्अ जलती है तो
        जलने दो
परवाने फ़ना[1] होते हैं तो
        होने दो
किसी की फ़ितरत[2] बदलने की
नायाब[3] कोशिश मत करो।

1 Die
2 Temperament
3 Fruitless

——❖——

लोग चाहते हैं, ऐसा भी कुछ मिले
जो ज़िन्दगी भर चले
अजीब चाह है, जब कि ज़िन्दगी ही
ज़िन्दगी भर नहीं चलती।

——❖——

देखता हूँ मैं मुड़कर पीछे
सोचता हूँ मैं क्या हूँ
उन ख़ूबसूरत ख़्वाबों की
बस इक टूटी मज़ार[1] हूँ
मैं तो इक साहिल[2] था
मगर प्यासा ही रह गया
बहते दरिया की तिश्नगी[3] का
बस इक टूटा कनार हूँ।

1 Grave
2 Bank
3 Thirst

❖

फ़ासले मिटाया करते हैं वो लोग
जो चलते रहते हैं
फासलों की शिकायत करते हैं वो जो
सरायों[1] में पड़े रहते हैं।

1 Inn

❖

साहिलवाले ही अक्सर
किश्ती डुबोया करते हैं
वरना दरिया को किश्ती के अलावा
साथ किसका होता है ?

❖

आदमी के आदमी से रिश्ते कम ही होते हैं
आदमी और आदमी में लेन–देन ही होते हैं
जज़्बातों[1] के साए[2] की चादर किसी पर डाल देते हैं
मौसम बदलने पर उसे बदल भी देते हैं।

1 Feelings
2 Shaddow

महफ़िल सजाई थी हमने
तेरी यादों की शम्मएँ जलाकर
शम्मएँ मगर जलती रही
देर तक महफ़िल के बाद भी।

अपने आप से मैंने कभी
मोहब्बत नहीं की
मोहब्बत मैंने लोगों से ही की है
अपने आप से मैं कभी परेशाँ नहीं रहा
परेशाँ मैं लोगों से ही रहा हूँ।

ख़मोशी को हमारी ग़लत समझ लिया
न इक़रार[1] ही समझा, न इनकार समझा
परशानियाँ उनकी अपनी थी, फिर भी
कुसूरवार उन्होंने हमको समझ लिया ।

1 Consent

एक ज़माना हुआ करता था किसी वक़्त
आदमी से आदमी मिला करता था
आदमी से आदमी तो अब भी मिलता है
पर किसी आदमी में आदमी नज़र नहीं आता ।

किसी के ग़म को लेकर
दुनिया भी क्यों रोने लगे
रोने के लिए दुनिया के पास
अपने ग़म ही काफ़ी हैं ।

दूसरों की नज़रों से बचना
मुश्किल नहीं होता
आदमी को ख़ुद की नज़रों से
बचना चाहिए ।

तेरे वादों का ऐतबार[1] कहाँ तक करूँ
वादे मनाने के लिए होते हैं
निभाने के लिए नहीं
तेरे आने का इंतेज़ार कब तक करूँ
रात सोने के लिए होती है
बिताने के लिए नहीं।

1 Trust

सुना है ऐ इश्क़, तेरे नाम पै
लोग रोते हैं
क्या इस दुनिया में रोने के लिए
और अच्छे बहाने नहीं हैं ?

किस किस को याद करें
किस किस को भूलें
अब तो ख़ुद को ही याद रखना
मुश्किल हुआ जा रहा है।

यहाँ आदमी तो क्या
क़बीलों[1] तक की
ख़रीद-फ़रोख़्त[2] होती है
हम इस मुल्क को
जम्हूरियत[3] क़रार देते हैं।

1 Whole group
2 Sale
3 Democracy

वो ज़माना गया जब
ख़ुदा से सवाल नहीं किया करते थे
अब तो ख़ुदा के पास भी
दुनिया के सवालों के जवाब नहीं।

ख़मोशियों की सदा[1]
कानों में गूँज रही है
जो आज तक सुना नहीं
बहुत कुछ कह रही है।

1 Call of silence

दामन पै या चेहरे पै दाग़ न दिखे
इसका उम्र भर ख़याल रखा
मासूम गोरे चेहरे पै काजल का
टीका लगते जब देखा,
नज़र न लगे इसलिए
कहीं कोई दाग़ ज़रूरी है ।

❖

ज़िन्दगी अपनी इक
हँसी ख़्वाब[1] की तरह जीओ
नींद खुलने पर पता नहीं
क्या नज़ारा[2] होगा ।

1 Beautiful dream
2 Sight

❖

इस कशमकश[1] की ज़िन्दगी से
निज़ात कैसे पाएँ कहो
आरज़ुओं[2] के मेले में हम हैं
निकले तो कैसे निकले, कहो ।

1 To do or not to do, dilemma
2 Desires

❖

कमरा बंद है, या
दरवाज़ा बंद है
जानने की कोशिश कर रहा हूँ
मैं अंदर हूँ, या
बाहर हूँ
जानने की कोशिश कर रहा हूँ
कोई जानता हो
तो बता दे
कोई कहाँ है
जानने की कोशिश कर रहा हूँ।

❖

इक सदा[1] तो आई मगर अनसुनी ही रह गई
हर बड़े शहर की ये बड़ी कहानी बन गई।

1 Call

❖

सिढ़ियों से गिरे तो
बचना मुश्किल नहीं
नज़रों से गिरे तो
उठना आसाँ नहीं।

❖

ज़िन्दगी उस तज़रबे[1] का नाम है जिस में
कल, आज और कल कभी एक से नहीं होते ।

1 Experience

कहते हैं न मुद्दआ[1] है न आरज़ू[2] कोई
मगर जीते हैं लिए हुए हसरतें[3] ज़माने की ।

1 Issue
2 Desire
3 Aspirations

कभी उलझन में होता हूँ, कभी सुलझा लगता हूँ
अपनी हस्ती[1] का ये मैं रक़्स[2] समझता हूँ ।

1 Existence
2 Dance

इस दरिया से हमारा यही है रिश्ता
हम किनारे से किनारा किए चलते हैं ।

गुनाहगार कौन नहीं, कोई तो बताए मुझे
कोई है अपने ख़ुद का, कोई दुनिया का।

❖

ज़िन्दगी ने हम पै बहुत बड़ा रहम किया,
और तो बहुत कुछ रह गया, अफ़सोस नहीं रहा।

❖

आदम के ज़माने से हवा जो चली थी
मौसम के बदलने पर भी, बरक़रार[1] है।

1 Still the same

❖

ज़ख़्म तो भर ही जाते हैं कुछ समय के बाद
ज़ख़्म के दाग़ लेकिन मिटते नहीं समय के साथ।

❖

पढ़नेवाले कहीं के कहीं पहुँच जाते हैं
पढ़ानेवाले वहीं के वहीं रह जाते हैं।

❖

शुक्ल पक्ष हो या कृष्ण पक्ष
चाँद उतना ही रहता है
लोग फिर भी शुक्ल पक्ष की
राह देखा करते हैं।

❖

अँधेरे ही नज़र आते हो चारों तरफ़,
तब बस इक शम्अ जलाने की ज़रूरत होती है।

❖

रास्ते से हटके चलनेवाले
मंज़िल का पता पूछते नहीं।

❖

और कोई क्या देगा दर्द का तोहफ़ा[1] हमको
इसे तो हमने ही अपने लिए ईजाद[2] किया है।

1 Gift
2 Invent

❖

कितनी ही छुपाओ असलीयत अपनी
आईना सही हक़ीक़त जान ही लेता है।

❖

III

जगण्याचा दिवस आजच असतो
उद्याचा विचार करायचा नसतो
जीवनाच्या तत्त्वज्ञानातील एक विचार
पण आज म्हणजे काय ?
...

१

निरभ्र निळ्या आकाशाचं
स्पष्ट प्रतिबिम्ब पडलेलं
शांत असं ते तळं
कुठलंही स्पंदन नाही
वाऱ्याचाही उपद्रव नाही
काठावरच्या मोठ्या झाडाचं
पाण्यात पडलेलं प्रतिबिम्ब
पाहताना हरवून जायला होतं
नुसती झाडाची सावलीच नाही
त्याचा विस्तार
पाने, फुले, फळे
अर्थ प्रत्येक गोष्टीलाच
पाण्याच्या पृष्ठभागावर
पडलेला तुरळक कचरा
त्यालाही अर्थ आहेच
कचरा नकोसा का वाटतो ?
निर्मिती प्रक्रियेत
कचऱ्याची निर्मिती अनिवार्यच !
आणि हे सर्व निहाळताना
अचानक
काहीतरी येऊन पडतं
तरंग उठतात
प्रतिमा वर-खाली होतात
आंदोलित अवस्था...
वेळ लागतो स्थिरस्थावर व्हायला
पण तेही होतंच....

२

खंत नाही, खेद नाही
वेदनेला परि अंत नाही
कसा असेल ?
तृष्णेचे प्रकार किती
कोणाला ते माहित नाही
तृप्तीची भावना नाही
मृगजळाचे भान नाही.
धावत असतो मैलोगणती
कशापायी ते ठाऊक नाही
दोरी दिसता थांबलो होतो
बक्षिसाचे परि भान नाही.
काय गवसले काय हरवले
कधी कळायला हवे होते
हिशेब करता आला नाही
परि खंत नाही, खेद नाही.

३

केव्हा तरी अभ्यासलेल्या
कवितेच्या ओळी आठवतात
"I am the monach of all I survey
My right there is none to dispute."
वस्ती नसलेल्या एका ओसाड बेटावर
पोचलेल्या खलाशाचे उद्गार.
सोसायटीतील सदनिकेत
एकट्याने राहणाऱ्या
माझ्यासारख्यालाही असेच वाटले
तर नवल वाटू नये.
कोणाचा उपद्रव नाही
कोणाची आडकाठी नाही
कोणाची मागणी नाही
कोणाशी विसंवाद नाही
कोणाचा दबाव नाही
संपूर्ण जागा आपली
संपूर्ण वेळ आपला
इतके स्वातंत्र्य इतरत्र कोठे ?
त्याबरोबरच वरील कवितेच्या
इतर ओळी आठवतात
एकटेपण ही नकोसे वाटते
त्यापेक्षा वस्ती बरी वाटते
मित्र नातेवाईक आवश्यक वाटतात
शेजारी शत्रू असले तरी चालतात.

गोंगाट परवडतो पण
ओसाड बेटाची शांतता
शांत बसू देत नाही.
‘आलीया भोगासी असावे सादर’
या उक्तीप्रमाणे
तोही आपली पर्णकुटी सावरतो
आणि विश्रांतीच्या वेळी
विश्रांती घेतो,
इतर प्राणिमात्रांप्रमाणेच !

४

सामान्य या शब्दाचा अर्थ
बहुतांशी सारखेपणा
असा असावा.
व्याकरणात सामान्य नाम
अशी संज्ञा असते
पाणी, माणूस ही उदाहरणे.
शहरातील नदीचे पाणी,
गावातील नदीचे पाणी,
विहिरीचे पाणी,
मिनरल वाटर,
यात सामान्य काय असते ?
कोठे ते वाहत नाही
कोठे ते पिता येत नाही
कोठे घागर बुडवावी वाटत नाही
मग पाण्याचे पाणीपण काय ?
माणसाचेही असेच
मानसशास्त्रात
सामान्य मानसशास्त्र एक शाखा.
सर्वसामान्य माणसाचे मानस कसे
याचे सर्वसामान्य विवरण.
दोन एकसारखी माणसे
कोणी पाहिली आहेत कधी ?
मग सर्वांचे एकसारखेपण
ही फारच लांबची गोष्ट झाली.

दगड म्हटला तरी त्याचे सामान्यत्व
शोधणे अवघडच वाटते,
इतके त्याचे प्रकार !
एकूणात काय तर
सामान्य ही संज्ञाच
अतिसामान्य आहे.
शास्त्र बनविण्याच्या खटाटोपात
या संकल्पनेचा
उदय आणि उत्कर्ष झाला असावा.
प्रत्यक्षात मात्र
'एकाच माळेचे मणी'
जर नीट तपासले
तर कधी एकसारखे नसतात,
अगदी रुद्राक्षाच्या माळेतही !

५

अनेकांनी सुचविले
पुस्तकात स्वत:चा परिचय
असायला हवा.
अपेक्षा रास्त आहे
समजून घेण्यासाठी
परिचयाची आवश्यकता असते.
पण परिचय हा
अवघड निबंधाचा विषय आहे.
प्रथम आपण स्वत:लाच
किती माहित असतो ?
जे माहित असते त्यातील
आपण किती स्वीकारतो ?
जे आपले नाही तेही
पुष्कळसे आपल्याला
चिकटलेले असतेच !
त्यातूनही समजा अभ्यासाने
आपण आपल्याला ओळखले
तर जसेच्या तसे
प्रस्तुत करणे अवघड !
उणीवांचा आलेख मांडता येत नाही
उरला आत्मप्रौढीचा भाग,
लोक दांभिक म्हणतील !
याच्याच पुढचा भाग
आत्मचरित्राशी निगडित आहे

जे प्रश्न परिचयासाठी
उपस्थित होतात तेच
आत्मचरित्रालाही पडतात.
श्रीकृष्णाने सर्वजन्हिताय्
भग्वद्गीता सांगितली
ती उपयोगी आहे.
त्याने अर्जुनाला
विश्वरूपदर्शन दिले
त्यालाही अर्थ आहे.
परंतु जर श्रीकृष्णालाच
आत्मचरित्र लिहावे लागले असते
तर खरे काय ते सर्व
त्याला लिहिता आले असते काय ?

६

अगदी सुनामी नाही तरी
वादळं ही येतच असतात
समुद्रात तशी जमीनीवरही
समाजात तशी घरातही
आणि अगदी प्रत्येकाच्या मनात
कधीन् कधी...

उध्वस्त होण्याचे क्षण
येतात कुठे कुठे
पण निसर्गनियमानुसार
पूर्वपदावर सर्व काही
येत राहते...
अगदी थोडे अपवाद सोडले तर...

निसर्गाला त्याचे कार्य करायला
अवसर आणि वेळ
हा द्यावा लागतो
कितीही अस्वस्थ होणे झाले तरी
थोडा सहभाग आपला असावा लागतो.

७

व्यथा हा फक्त कथेचा विषय नसून
अनुभवण्याची अपरिहार्यता आहे
जन्मतो ते व्यथा घेऊनच, अन्
जातोही व्यथित होऊनच !

व्यथा कोणाला नसते ?
एक नाही अनेक असतात
आणि क्वचित का होईना,
व्यथा नसणे हे पण
व्यथित होण्याचे कारण असते.

व्यथित व्हायला व्यथा
आपलीच असली पाहिजे असे नाही
काही लोकांची व्यथा ही
इतरांच्या व्यथेतून जन्म घेते.

व्यथांचे प्रकार अनेक
पण तो विषय शास्त्रांचा,
कविता किंवा साहित्याचा नाही
व्यथेतून चांगले साहित्य घडते.

व्यथा असणे चांगले की वाईट ?
कोण किती पेलू शकतो
यावर असते ते अवलंबून

पण एक मात्र नक्की
व्यथा ही अनिवार्य आहे
अनिवार्यचा अर्थ एवढाच
की ती असणारच असते
पण तिचे निवारण करणेही
आपल्याच हाती असते.

आणि एक संपवली म्हणजे झाले
असे कधी होत नाही
दुसरी येणारच असते
आणि आजन्म हे
चालू असणार असते.

❖

८

रंगमंच आणि मी
एकत्रच असतो नेहमी
कधी वाटते
एवढा विस्तीर्ण रंगमंच
आणि एवढासा मी
कसा कोणाला दिसणार ?
तर कधी वाटते
इतक्या भूमिका माझ्या वाट्याला
रंगमंच इतका लहान
सर्वच्या सर्व
यावर कशा वठवणार ?
रंगमंच आणि मी
यांच्यावरील हे नाटक
सतत चालू राहणार
आमच्यातील द्वंद्व
हॅम्लेटसारखेच
नेहमी जिवंत राहणार.

❖

९

काय काय हरवले
कधी हरवले
कुठे हरवले
कळणार नाही
आणि मी ही ते
कधी आता शोधणार नाही.

संबंध असतो गोष्टींचा
विशिष्ट काळाशी
विशिष्ट स्थळाशी
बदलले संदर्भ सगळे
शोधून सापडले तरी
काळ परत येणार नाही.

धुके नसता वाट हरवली
उजेड असता वाट चुकली
जायचे होते कोठे
पोचलो मात्र कोठेतरी
मागे वळून पाहिले नाही
आता मागे वळणार नाही.

सांगायचे होते काही
शब्द हरवलेले होते
वेळ ही निघून गेली
सांगायचे राहून गेले
भाषेचा आता उपयोग नाही
मी काही सांगणार नाही.

अंधार दाटून आला होता
दिवे लावायला निघालो होतो
वारा वाहात होता
खांबावर दिवा टिकत नव्हता
अंधारात जरी चालावे लागले
दिव्यामागे धावणार नाही.

कसा कुणाला देव भेटला
कथांमधून मी वाचत होतो
देवळांमध्येही जात होतो
देव परि मज भेटला नाही
देवळांमध्ये मी जातच राहीन
देवाला परि शोधणार नाही

स्वप्नातच का होतो तेव्हा
गीत एक मी गुणगुणले होते
गीतात आता ती तान नाही
कंठात आता ते त्राण नाही
शब्द जरी आठवले मजला
ते गीत आता मी गाणार नाही.

कुठेतरी, केव्हातरी, काहीतरी
करायचे राहून गेले
काय होते करायचे
तेही विसरून गेलो
उशीर आता फार झाला
करता काही येणार नाही.

१०

वाटाड्यांचं पीक उदंड आलंय
कोणी काही बी करुन देतो
फक्त सांगा कुठे जायचं ते
थेट शेवटाला नेऊन सोडतो.

ठरलं का आता कुठं जायचं
बँकाक-पटाया की मग पॅरिस
तिकीटासह सर्व येवस्था बघतो
आणि मी सवता बरोबर येतो.

कंत्राटदार नसं ना का तुमी
कंत्राट मी मिळवून देतो
तुम्ही फक्त बील लिवायचं
पास करुन घेतो, चेक आनतो.

शिकणाऱ्याच्या मागे वाटाडेच वाटाडे
कोणी आयआयटीला पाठवत्यात
कोणी एमबीएला पाठवत्यात
तर कोणी अमेरिकेला सोडतात.

शिकनारा शिकावा असं बी न्हायी
काय शिकायचं ते ठावं पायजे
ॲडमीशन, परीक्षा समदं करतो
अन् हातात डिग्री आनून देतो.

११

जगणे एक काव्य असते
त्यासाठी माणूस व्हावे लागते
त्या काव्याची भाषा नसते
फक्त अर्थाची एक जाण असते.

जरी काव्य शब्दांत गुंफले
ते शब्दांच्या पलीकडेच असते
अर्थ त्यात एवढा असतो
शब्दांत कधी तो मावत नसतो.

शब्द हे असतात बंदिस्त घरांसारखे
अर्थ मात्र असतात आकाशासारखे
घरात सुरक्षित असल्यासारखे वाटते
आकाशात वावरायला धाडस लागते.

बहुतेक जण शब्दांच्या अलीकडेच जगतात
थोडेफार शब्दांपर्यंत पोचतात
कवी, कलाकार, शास्त्रज्ञ मात्र
शब्दांच्या सीमा ओलांडतात.

१२

जगण्याचा दिवस आजच असतो
उद्याचा विचार करायचा नसतो
जीवनाच्या तत्त्वज्ञानातील एक विचार
पण आज म्हणजे काय ?
काळाच्या परिमाणातील
सूर्योदय आणि सूर्यास्त
आजची व्याख्या करणारे
एक आयाम

जगण्याच्या कालप्रवाहाला
एवढे एकच आयाम कसे ?
तसे पाहिले तर आताचा क्षण आपला
पुढचा क्षण हा उद्याप्रमाणेच !
असे जगणे हे क्षणभंगूर असते
क्षणाच्या अस्तित्वाला
अस्तित्व तरी म्हणता येईल काय ?
आणि असे क्षण, दिवस
यांच्या बेरजेने काही वर्षे जगलो
तरी काळाच्या अनंत अवकाशात
असा कालखंड एखाद्या धूलीकणाप्रमाणेच !

अस्तित्वाचा मग अर्थ तरी काय ?
अस्तित्व कदाचित निरंतरतेत शोधावे लागेल
अंतरे एकमेकांमधली

अंतरे निसर्गातली
अंतरे काळातली
ओलांडली तरच कदाचित
अनंतातील आपल्या अस्तित्वाचा अनुभव
आपल्याला घेता येईल.

—❖—

१३

भ्रमाचा भोपळा फुटला
हा वाक्प्रचार नेहमीच ऐकतो/वाचतो
त्यात काय मोठेसे, जर
तो फुटलाच नाही तर
भ्रमाचा होता कसे म्हणणार ?

वापरात भोपळा नेहमी एकवचनीच
परंतु प्रत्यक्षात मात्र
प्रत्येकाच्या मनात असते
भोपळ्यांचे पीक आणि
ते नित्य-नियमाने येत राहते
इतर पिकांप्रमाणेच.
भ्रम कोणाला नसतात
आणि कशाचे नसतात
स्वत: पासून सुरू होतात
ते नातेसंबंध, मैत्री, व्यवसाय
आदि सर्व क्षेत्रे व्यापतात
गाजर गवताप्रमाणे.
एका विशेष क्षेत्राचा उल्लेख हवाच
तो म्हणजे प्रेमसंबंधांचा
हे एक अत्यंत पुरातन,
व्यापक आणि प्रगतीशील क्षेत्र,
याचे विविध आविष्कार समजायला
उर्दू शायरीच
उपयोगी पडू शकते

भोपळा फुटल्याचे
लांबून जेव्हा ऐकू येते
तेव्हा थोडी गंमत वाटते, पण
फटाक्यांसारखे
यांपासून नेहमी
लांब राहता येत नाही
आपणही या फटांक्यांच्या
तावडीत सापडतच असतो
त्याचा त्रासही होतो.
कधी किंचित भाजते
तर कधी नैराश्यही येते
भ्रमाची भ्रमंती ही अशी व्यापक
कुणालाही नाही ती चुकत,
थोडा अभ्यास, थोडा संयम,
अनुभवांची-आपल्या अन् इतरांच्या-
शिदोरी यांच्या मदतीनेच
भ्रमसागर पार होत असतो.

१४

जरा लांबूनच दिसला
एक माणूस चाचपडत चालत होता
काठी टेकवत टेकवत येत होता
हमरस्ताच होता, पण
कडेला खोदून ठेवलेला होता.
जवळ आल्यावर लक्षात आले
काठीचा रंग पांढरा होता
पण धुराने काळा पडला होता
नेत्रांना दृष्टी नाही
काठीचा रंग काळपट झालेला
आणि रस्ता खोदलेला
डोळस माणसांचे जेथे खरे नसते
अशा अपंगांचे काय होते ?
डोळे असून सुद्धा
मला काठीचा रंग
ओळखता आला नाही
चालणाऱ्याला डोळे नाहीत
हे माझ्या डोळ्यांना समजले नाही.
प्रश्न एक समोर आला
डोळे असलेले
खरोखर डोळस असतात काय
आणि डोळे नसलेले
खरेच आंधळे असतात काय ?

❖

१५

लहानपणापासूनच
प्रश्नोत्तरांची सवय लागते
शाळेत ती पक्की होते.
प्रत्येक प्रश्नाला
उत्तर हवे असते
कोणाचे बरोबर तर
कोणाचे चूक असते.
त्या प्रमाणात गुण ठरतात
प्रश्न आणि उत्तर
यांचे नाते ठरवतात.
प्रश्नोपनिषदाची ही सोपी
अंकगणितीय मांडणी !
आयुष्यात जेव्हा पुढे प्रश्न येतात
तेव्हा मात्र चाचपडतात
उत्तरे परंपरेत नसतात
उत्तरे पुस्तकात नसतात
प्रत्येकाचे प्रश्न वेगळे
प्रत्येक प्रश्नाचे उतरही
वेग-वेगळे !
व्यक्तीनुसार उत्तर बदलते
वेळेनुसार उत्तर बदलते
परिस्थितीनुसार उत्तर बदलते
कधी कारण नसताही
उत्तर बदलते !

उत्तर चूक की बरोबर
ठरवता येत नाही
गुण देणारे मास्तर नसतात
आणि मास्तरांचे गुण तरी
कोठे बरोबर असतात ?
उत्तर म्हणून एक आपण निवडतो
त्यातून नवीन प्रश्न निर्माण होतो.
एकाच वेळी प्रश्न अनेक असतात
एकमेकात गुंतलेले असतात
शहरांच्या नकाशांप्रमाणे
उत्तरांचे नकाशे नसतात
अंकगणिताचे ज्ञान पुरत नाही
व्यापक ज्ञानाचा आधार लागतो
प्रत्येक जण आपल्यापुरता
अभ्यास करतो
आपल्या प्रश्नांच्या मर्यादा
आखून
अनोळखी मुलुखापासून
लांब राहतो.

❖

१६

रेशीमबंधांच्या गाठीही तुटतात
कधी कधी...
अर्थ राहिला नाही म्हणतात
विसरून जायला सांगतात.
खरंच काय अर्थ असे संपतात ?
तुटलेले धागे विस्मृतीत जातात ?
बांधलेल्या बंधांचे अस्तित्व संपते ?
पण तुटलेल्या गाठींचे काय ?
शून्यालाही जिथे अर्थ असतो
नव्हे, अनर्थालाही अर्थ असतो
तर गाठींचे जे पर्व होते
ते अपर्व कसे होते ?
शब्दकोशात अर्थ दिले जातात
पण तुटलेल्या बंधांचे अर्थ
शब्दकोशात नव्हे, तर
अनुभवात शोधावे लागतात.
त्या बंधांना इतिहास असतो
इतिहास अर्थशून्य होत नसतो
इतिहासातील पात्रे भुते होतात
वेळी-अवेळी समोर उभी राहतात
प्रत्येक वेळी त्यांचे रूप वेगळे
वेगवेगळा अर्थ घेऊन येतात.

१७

दार वाजले तरी कोणी येईल
असे मुळी समजू नको
दार वाजवले, कोणी उघडेल
असे कधी समजू नको.
साद घातली, प्रतिसाद येईल
असे कधी समजू नको
बाहेर गेलेला परत येईलच
असे कधी समजू नको.
आयुष्य स्वत:साठी खर्च झाले
असेच नेहमी समजत चल
दुसऱ्यासाठी फार-फार केले
असे कधी समजू नको.
शाळेत गेला, शिकून येईल
असे कधी समजू नको
मोठा झाला, शहाणा होईल
असे कधी समजू नको.
समजून घेता आले कुणाला
समजून त्याला घेत चल
वाटते आपल्याला समजते सगळे
असे कधी समजू नको.

१८

धूर निघाला होता, पण
आगीचा डोंब उसळला नव्हता
धूर होता की धुके होते
वाट त्यात दिसली नाही.
धूर मुद्दाम केला जातो
कोणाला काही लपवायचे असते
धुराचे साम्राज्य सर्वत्रच असते
कोणाला काही मिळवायचे असते.
धुरकटलेल्या असतात नजरा
स्पष्ट काही दिसतच नसते
धुरकटलेल्या वातावरणात वाढलेल्यांची
समज ही धुरकटलेलीच असते.

१९

आयुष्य गेले कसे सरून
मला सांगता येणार नाही.
गाठोडे तेथे बांधून ठेवले
तेथे पोचता येणार नाही.
मित्रमंडळ माझे फार मोठे
भेटायला वेळ मिळणार नाही.
जायचे होते लांब कोठे
पाय थकले, पोचणार नाही.
आशा, आकांक्षा, नाती, संपत्ती
सोबत मी नेणार नाही.
झाले-गेले सर्व विसरून जा
मी आठवण कशाची ठेवणार नाही.
कालच्या भानगडी, उद्याच्या आशा
यांचा धांडोळा मी घेणार नाही.
आहे तोवर सर्व आनंद आहे
कधी निघायचे ते सांगणार नाही.

२०

त्याने केलेले प्रेम ते
तुझ्या वाट्यास येणार नाही
त्याचे प्रेम ही निष्ठा होती
विभागली ती जाणार नाही.
ऊन, पाऊस, वारा यांसारखे
माणसाला जमणार नाही
वाटेतील सर्वच त्यांचे वाटेकरू
असे माणसात असणार नाही.
आपले, परके असेच बाळकडू
पीत पीतच मोठा झालेला
सर्व समभाव असा कधी
जोपासता त्याला येणार नाही.
एक सांगता येईल मात्र
निष्ठेचे स्थानही कायम नसते
कोण जाणे कधी अन् कशाने
त्या स्थानी ती असणार नाही.

२१

नदीकाठच्या हवेलीच्या झरोख्यातून
माणसं बघतात नदीकडे, आणि
नदीप्रवाहातील भोवऱ्यात
गटांगळ्या खाणाऱ्या त्या
अगतिक अनामिकाकडे...
एकाधिक छपरांचा आधार असलेले
गच्चीवरून बघत असतात
ओसरीचाही आधार नसलेल्या
फुटपाथवर खेळणाऱ्या पोरांकडे...
निर्विकार, नि:शब्द अवलोकन
कोणत्या संस्कारांतून आले,
कोणत्या विचारांतून आले,
कोणत्या आदर्शांतून आले
हे प्रश्न अनुत्तरितच...
बघणे असे मात्र चालूच राहते
कलादालनातील चित्र पाहतो तसे
आणि सरकत राहतो
उच्च संस्कारितेच्या भ्रमात
एका चित्रापुढून दुसऱ्याकडे...

२२

मी मुलखावेगळा माणूस पाहिला
ड्रायव्हरच्या स्मशानयात्रेत सामील झाला
मृतदेह स्वत:च्या गाडीत ठेवला
स्वत: ड्रायव्हरच्या जागी बसला.

मी मुलखावेगळा माणूस पाहिला
जगात सर्वात श्रीमंत गणला गेला
आवश्यक तेवढाच स्वत:साठी ठेवला
बाकी सर्व लोककल्याणासाठी दिला.

मी मुलखावेगळा माणूस पाहिला
आजन्म एकटाच राहिला
खाजगी काही राखून न ठेवता
स्वत: पूर्णपणे सार्वजनिक झाला.

मी मुलखावेगळा माणूस पाहिला
रस्त्यावर किरकोळ कामे करणारा
स्वप्नात त्याने मोठे आकाश पाहिले
प्रयत्नांती तो मफतलाल झाला.

अशी माणसे गुजरात, महाराष्ट्रात पाहिली
गुजरातेतील आकाश आर्थिक होते
महाराष्ट्रात ते पारमार्थिक होते
आता तसा फरक नाही राहिला.

❖

२३

पौर्णिमा होती परि
चंद्र दिसला नाही
ढग आले परि
पाऊस पडला नाही

रेशन कार्ड दाखवले तरी
धान्य मिळाले नाही
अनुदान आले तरी
रस्ता झाला नाही

रात्र संपली परि
अंधार संपला नाही
शाळेत गेला तरी
शिक्षित झाला नाही

बटन दाबले तरी
दिवा लागला नाही
नळाला पिण्यापुरतेही
पाणी आले नाही

व्यवस्थापनाच्या संस्था
ग्रामपंचायतींइतक्या झाल्या
कशाचेही व्यवस्थापन
कोणाला करता आले नाही.

२४

शायराना स्टाईल मध्ये
लिहून ठेवले आहे,
''अफ़सोस ये नहीं
के ज़िन्दगी में कोई आरज़ू पूरी नहीं हुई,
अफ़सोस मगर है
के ज़िन्दगी में अब आरज़ू ही रही नहीं''
विरोधाभास !
एकीकडे सर्व इच्छा पूर्ण झाल्याचे समाधान
तर दुसरीकडे इच्छाच राहिली नसल्याचे दुःख !
खरे तर इच्छा न राहणे
म्हणजे जीवनमुक्तीच !
मुक्त व्हावेसे वाटणे सोपे असते
पण मुक्तीच्या दारात उभे असताना
रुखरुख वाटणेही सहजच होते.
खरोखरच मुक्त होणे अवघड असते.
तुरुंगातून सुटलेला माणूस
परत परत तुरुंगात जात असतो,
व्यसनमुक्त झालेला माणूस
परत व्यसनाधीन होत असतो,
रोज खुंटाला बांधली जाणारी म्हैस
दिवसभर मोकळी फिरून
सायंकाळी परत खुंटाजवळ येते.

❖

२५

माझ्यातला ‘मी’ काय होता
आणि आता काय झाला
हे माझे मलाच मुळी
समजण्यास उशीर झाला.
एकेकाळी मी ‘मी’ नव्हतोच
मी म्हणजे एक गाव होते
मी म्हणजे एक जात होती
मी म्हणजे नाती-गोती होती.
माझी ओळखही तशीच होती
कोणाचा कोण,
कुठला कोण,
काय करत असतो, इ.
मला एक नांव होते
शाळेतील हजेरीसाठी आवश्यक
त्यानुसार शिकत गेलो
प्रमाणपत्रे मिळवित गेलो.
प्रमाणपत्रांच्या आधारे कालक्रमण झाले
स्थलांतरही पुष्कळ झाले
गावातले कोणी आता ओळखत नाही
जात माझी कोणाला माहित नाही.
मी जेव्हा आता सभोवती पाहतो
ओळखीचा कोणी क्वचितच भेटतो
ओळखीला आता अर्थही राहिला नाही
माझ्या ‘मी’चा चेहरा मलाच माहित नाही.

२६

चालता चालता दमलो होतो
विश्रांती घ्याया थांबलो होतो
उन्हाचा त्रास झाला होता
सावली कोठे शोधत होतो.

एका झाडाखाली येऊन थांबलो
थोडा थकवा कमी झाला
मरगळ-ग्लानी कमी झाली
झाडाची अवस्था ध्यानी आली

झाडही उन्हात उभे होते
पर्णसांभार त्याला किती हे
अगोदर पाहिले नव्हते
झाडाखाली सावली अशी फार नव्हती
झाडही माझ्यासारखेच
सावली कुठेतरी शोधत होते.

२७

आयुष्यात 'च' चा वापर जास्त झाला
झालंच पाहिजे
केलंच पाहिजे
असंच पाहिजे
वाईटच आहे
नकोच !
इतके 'च' आवश्यक असतात काय ?
स्वत:ला कळत नसेल तर
इतरांना विचारून पाहावे.
छापखान्यातील जुळणी करणारेही
'च' किती लागतात
हे सहज सांगतील.
अक्षरांचे शब्द होतात
शब्दांतून भावही व्यक्त होतात
भावांची आवश्यकता नसता
शब्दांना शब्दच राहू द्यावेत.

२८

म्हणताना म्हणतो आपण
काल, आज आणि उद्या;
यांत फरक फार मोठा
असा कधी दिसत नाही.

वर-वर जरी हे खरे वाटले
तरी ते बरोबर मात्र नाही
काल हा एक मृत काळ
तर आज हा जिवंत आहे
आणि उद्याचे कोणाला माहित
त्याला तर अस्तित्वच नाही.

हे असे असले तरी
माणूस मृताचे भूत शोधण्या
स्मशानात जात राहतो,
तसेच आजचे जगणे विसरून
उद्याचा वेध घेत राहातो.

२९

स्वत:च्या कर्तृत्वाबद्दल
फार मोठे भ्रम
लोकांच्या मनात असतात.
'मी पाणी तापवले'
म्हणजे मी नेमके काय केले ?
फक्त गॅसवर पाणी ठेवून
गॅस पेटवला.
पाणी गॅसनेच गरम केलेले असते !
शिक्षक म्हणतात,
'विद्यार्थ्यांच्या पिढ्या घडवल्या.'
किती विद्यार्थी खरेच शिकलेत
हे ज्यांचे त्यांनाच माहित.
शिकण्यामागे शिकणाऱ्याचे प्रयत्न असतात.
गुरुजी कोणीतरी लिहिलेल्या पुस्तकातील
माहिती वेळापत्रकानुसार प्रकाशित करतात.
ती विद्यार्थ्यांपर्यंत किती पोचते,
त्यातील किती परस्पर पोचते, आणि
किती गुरुजींच्या डोक्यामार्फत पोचते
हे कोणाला ठाऊक ?
कोणी म्हणतो,
'मी गच्चीवर बाग फुलवली'
म्हणजे कुंड्या, माती अन् झाडे आणली,
पाणी घातले, खत घातले,
कधी कधी, नियमित फार तर.
झाडे त्यांच्या नियमानुसारच
वाढतात, फुलतात, फळतात !
त्यात आपले कर्तृत्व ते काय ?

❖

३०

आपली मुलं आपली
असं आपल्याला
खरच वाटत असतं.
ते खरंही असतं.
पण आपण सर्वच
काळाची मुलं असतो.
आपली मुलंही
काळाचीच मुलं असतात.
आपल्या त्यांच्याकडून
काही अपेक्षा असतात,
तशाच काळाच्याही
त्यांच्याकडून अपेक्षा असतात.
आपण काळापेक्षा लहान,
कितीतरी लहान !
त्यामुळे शेवटी
प्रत्येकाला
काळालाच जबाबदार
राहावं लागतं.

३१

जागा परिचित असली तरी
अंधारात चालू नकोस
अनवधानाने ठेवलेली
एखादी वस्तू मधे येते
अन् अपघात होतो.

अपघात झाल्यावर
मदतीलाही येतील कोणी
परंतु अंधारात का धडपडलास
म्हणणारेच जास्त असतील.

उजेड कमी असला तरी
अनुभवी लोकांचा कंदील
अशा वेळी उपयोगी पडतो
धडपडण्याअगोदर अडथळा दाखवतो.

जगण्याच्या आसमंतात
अशा अंधाऱ्या जागा अनेक
धडपडून जागे झालेल्यांनी केलेले
मार्गदर्शन उपयोगी असते.

३२

कोणाचे बूड जागचे हलत नाही
तर कोणाचे जाग्यावर टिकत नाही
भ्रमंतीचीच सवय होते कोणाला
पायाला एकतर भिंगरी असावी
किंवा बुडाला गळू तरी असावे.

काही काम असले तर जावेच लागते
पण काम नसले तरी जातच असतात
जाणे हेच एक काम झालेले असते
'का' हे फक्त त्यांनाच माहित असते.

काहींचा व्यवसायच भ्रमंतीचा असतो
बूड टेकायला त्यांना वेळच नसतो
त्यांना भ्रमंतीची सवय होते
व्यवसाय संपल्यावरही चालू राहते.

कितीही भ्रमंती करून झाली
तरी माणूस 'जागेवरच' असतो
कुठेही जाण्यायेण्याचा शिंतोडा
त्याच्या 'अंगावर' दिसत नसतो.

३३

तलावात बगळा ध्यानस्थ दिसतो
साधु असल्यासारखा भासतो
लक्ष एकाग्र केलेले असते
लक्ष्यात मात्र काय असते ?

जंगलात श्वापदे कशी वावरतात.
बिबट्या गवतात लपून असतो
दबा धरून बसलेला असतो
तरस शिकारीची वाट पाहातो.

प्राणिजगतात असतात स्वभाव
तसे ते वनस्पतींमध्येही आढळतात
झाडे सूर्यप्रकाशाकडे वळतात
तर वेली झाडांवर चढतात.

प्राणी आणि वनस्पती यांमध्ये
प्रत्येकाचे स्वभाव ठराविक असतात
मनुष्यजातीमध्ये मात्र
सर्व प्रकारचे आढळतात.

❖

३४

आयुष्यात
काय करायचे राहून गेले
याचा कोणी कोणी शोध घेतात
काय राहून गेले त्याऐवजी
काय केले, किंवा
काय करता आले, किंवा
काय करणे जमून गेले
याचा शोध सोपा
करण्याच्या गोष्टींची यादी
करता संपत नाही
हजार-पाचशे शब्दात काय
काही खंडातही लिहिता येत नाही.
गांधींना काही जमले
पण बरेच काही राहिले असणार
कुसुमाग्रजांना कविता जमली
पण न जमलेलेही बरेच असणार.
माणूस कितीही मोठा असला
तरी तो काय काय करणार ?
त्यामुळे एक करायचे राहून गेले
असे म्हणण्याने
इतर सर्व करून झाले
असाही अर्थ निघण्याची
शक्यता जास्त वाटते.

३५

आताशा वाक्प्रचार वापरात नसतात
किंवा असलेच तर वेगळे असतात
पूर्वी एक प्रचलित होता, बराच
''आत्याबाईला मिशा असत्या तर ?''

जर-तर चे व्याकरण शाळेतले
आणि जीवनात कधी न संपणारे
आपण संपलो असता कोणी तरी
'जर' चा प्रयोग हा करतोच !

'जर' आणि 'तर' मधील संबंध
खरोखरच इतका सरळ असतो का ?
की मग झाडाच्या फांद्यांसारखे
एकाच 'जर' ला अनेक 'तर' असतात ?

जीवनाचे व्याकरण आणि भाषेतील व्याकरण
यात फार फार तफावत असते
भाषेत सर्व साचेबद्ध असते, तर
जीवनात ते त्याच्या विरुद्धच असते.

IV

पावसाच्या सरींना
स्वत: ओलं होता येत नाही
त्यांचा ओलावा
इतरांसाठीच असतो.

जग आपापले
आकाशही आपापले
वाटा आपापल्या
स्वप्ने तर आपापलीच !

❖

वेळ कसा गेला
हे कळलेच नाही
कळायलाही
वेळ हा लागतोच !

❖

विशाल वटवृक्षाच्या सावलीचा
पुष्कळांना आधार वाटतो
पण सावलीबाहेर पडल्याशिवाय
वाढ होत नाही.

❖

जगण्याचे सार शब्दात मांडता येत नसते
जगण्याचे सार जगण्यातच असते.

❖

दुसऱ्याचं ऐकत राहिलात
तर शहाणपण वाढतं
आपलंच सांगत राहिलात
तर तेवढंच राहतं.

‘सत्यं वद, प्रियं वद’
हे शास्त्रवचन खरे असले तरी
धडपडलेल्याला सावरताना
पडला होता हे सांगावेच लागते !

बैलाला वाटते
गाडी आपण ओढतो
हाकणाऱ्याला वाटते
गाडी आपण चालवतो
त्यांना माहित नसते
चाकाचा शोध लागला नसता
तर त्यांनी काय केले असते ?

विचारलंच तर विचारलं जातं
किती भाषा येतात ?
किती पुस्तकं वाचली ?
किती लक्षात राहतं ?
आणि उत्तरं या प्रश्नांची
ठरवतात महती माणसाची.
पण कोणी कधी विचारत नाही
माणसाला
माणसं वाचता येतात काय !

❖

डोक्याला त्याच्या आतलाच माणूस कळत नाही
दुसऱ्या डोक्यातील माणूस त्याला कसा कळणार ?

❖

विसरण्यासारखंच असतं पुष्कळसं
विसरण्यासाठीच असतं पुष्कळसं
तरी पण माणूस बहुधा
विसरायचं विसरून जातो !

❖

जिंकण्यासाठी मी खेळत नाही
तर खेळण्यासाठी खेळतो
गंतव्यास पोचण्यासाठी चालत नाही
तर चालण्यासाठी चालतो.

❖

विशेष अस्तित्व नसताना गावात
लहानपणी बरेच ओळख दाखवित
शहरात येऊन चाळीस वर्षे झालीत
कोणी ओळखल्याचे आठवत नाही.

❖

येईल तो कधी तरी
अन् जुळेल नाते पहिल्या परी
हा फक्त आशावाद असतो
पहिल्यापरी होतच नसते
कालचे नाटक परत केले तरी
आजचे कालच्यापेक्षा वेगळे असते.

❖

बिन भिंतीची घरे होती
भिंती तेथे उभ्या राहिल्या
भिंतींमध्ये खिडक्या होत्या
त्याही उघडेनाशा झाल्या.

❖

जे आहे त्यापेक्षा अधिक चांगलं
हे बहुधा खरं असू शकतं
तरी पण जे आहे तेही चांगलं आहे
असं समजणं जास्त समंजसपणाचं असतं.

❖

'आय ॲम नॉट गिल्टी'
हे गुन्हेगार कोर्टात सांगत असतात
आपण यापुढे जाऊन सदा सर्वकाळी
दोषी सारखे दुसऱ्याला ठरवत असतो.

❖

फुकटच्या आवारात
जागा मिळालेली
भटकी कुत्री
जास्त जोरात भुंकतात.

---❖---

आजचेच आज करता
        वर्तमान त्याला म्हणावे
कालचेच आज करता
        वर्तमान कसे म्हणावे ?

---❖---

जीव कोणाकोणात गुंतला होता
पण गुंता सोडवता आला नाही
मैत्रीचे नाते जपले होते
पण मैत्रीचा अर्थ कळला नाही.

---❖---

फाटक्या, रंग उडालेल्या कपड्यांना
मातब्बर लोकांनी भाव आणला
गरिबांची त्यामुळे सोय झाली
ठिगळ आता लपवावे लागत नाही.

❖

फुकट मिळालेले पैसेही
जेव्हा लोक
मोजून खर्च करतात
तेव्हा त्यांच्या गरिबीची
कीव येते.

❖

एके काळी वाक्प्रचार प्रचलित होता:
‘औषधालाही पुरणार नाही’ असा
आता परिस्थिती उलट झाली आहे
सर्वांना पुरते पण औषधाला नाही !

❖

फाटलेलं शिवावं लागतं
तुटलेलं सांधावं लागतं
फेकून देणं सोपं असतं
नवीन परत घ्यावं लागतं
तेही फाटतच असतं
तेही तुटतच असतं
तेच ते परत परत
केलं ते करावं लागतं !

❖

स्वभाव बदलता येत नाहीत
मित्र बदलता येत नाहीत
जसे आहेत, जेथे आहेत
तसेच सांभाळावे लागतात.

❖

वाकड्यात गेलं की नाही सरळ होत
जणू काही कुत्र्याचं शेपूटच ते
सरळच ठेवलेलं बरं
कुत्र्यासारखं नाही जगावं लागत.

❖

साहित्य वाचताना जसे
पात्राना समजून घेतो
तसेच स्वत:लाही आपण
अधिकाधिक ओळखायला शिकतो !

अंधाराची अक्षरे उजेडाच्या पाटीवर
वाटा त्यांच्या हरवल्या वळणे नसलेल्या मार्गावर

मूर्खपणा करण्याचा अधिकार
प्रत्येकाला जन्मसिद्ध असतो
कारण शहाणपणाचा मार्ग
त्यातूनच जात असतो.

माणसासारखं माणूस
म्हणे शेवग्याची शेंग !
उद्या कुणाला कलिंगड म्हणतील.

लोक फार लवकर विसरतात
त्यांच्यासाठी कोणी काय केले ते
आणि चिंतन, लेखन, भाषण करतात
कोणासाठी काय करायला हवे ते.

❖

रानावनात हिंडताना
तरूवर दिसले काही
शहरातून फिरताना मात्र
माणूस दिसले नाही.

❖

V

Time has always haunted me in life
Now is the time, I just ignore it.

1

The human mind
Compares itself
With all those below him
Boasts of Russell and Einstein
Of IQ above 200
And all the achievements.
Did he ever think
Of his body's intelligence ?
Discriminating between
The reality and the symbol
Like the word tiger
And it's real sight
Coordinates innumerable
Mechanisms of the body
Neurological, biochemical and
What not !
The body that healed
Each part of itself
Without physicians and surgeons
For ages
And now also
Able to overcome the ill-effects
Of treatments.
It appears to possess an IQ
Far superior to mind
Leaving behind Bertrand and Albert.
Intelligence of the body
Is not limited by
An assortment of a few genes
And some limited random experiences
But a result of evolution
Over more than million millennia.
If I were to treat
Body intelligence as norm
Mind intelligence may stand
At an idiot level !

2

Tragedy of a mind-reader

Reading someone's mind is
an art and a science.
A few people do it as a hobby,
some as a profession.

A guy developed the skill
and enjoyed for long,
practised it as profession
which served him through life.

But at the end of it
he admits, not liking it !
Life is a great theatre
and people play roles.

Plays are manifold
and roles keep changing.
Everyone has to act
in tune with character.

The mind-reader also
has his roles to play
and as a professional
knows what others play.

It is here the proverb helps
"Ignorance is bliss",
but the mind-reader
can't help but to know.

He reads the thoughts,
he reads the feelings,
he reads the motives,
he reads the actions.

Knowing all these
may be useful at times,
but knowing some of it
can also be painful !

Charm of relationships,
an elixir of life itself
is in jeopardy, if
all the above is known.

Enjoyments will have reservations,
expressions with inhibitions;
charming moments of intimate relations
are reduced to mere give and take/
social exchange/
professional public relations !

❖

3

Meetings have agendas
Sometimes announced
Sometimes unannounced
Hidden agenda is
a common usage
now-a-days.

Agenda is no more
a monopoly of meetings.
Individuals have
day-to-day, agendas
And hidden agendas are
common with them too.

Agendas may have
different colours
Some are totally personal
Some may have philanthropic bend
Some professional
Some political
Political agendas appear social
but in last analysis
they are all personal.

Once upon a time
people left their homes
in the morning,
without anything in mind
And they would meet people
or visit places
without any intention.

They returned satisfied
having done something
or even not having
done anything
Times have changed
One goes to bed to relax
but gets busy thinking
what shall be his agenda
for the next day.
His sleep depends on
the feasibility of it
beginning in the next morning.

Then there are a few
who have gone through
all this world of agendas
and have transcended
so to say.
No purpose is left
Life drifts, or
runs in a routine.
It may be called stagnation
or even redundance
But !
If you look at it positively
it is emancipation,
complete freedom from bondage !

4

Life runs like a time-piece
without the pressure of
the power or the spring

Life flows like a river
sometimes smooth,
sometimes turbulent
due to rocks

Life is like a musical concert
There's no conductor
There are no players
Notes come from
different corners

Life is a tragedy of a comedian
who was laughing all the time
has become silent over time

Life is an endless game
No one wins, no one loses
The game suspended
when day comes to an end.

5

Many struggle
And think
Life is a battle
नज़रिया अपना–अपना !
Individual perspective !
Someone else thinks
It is a journey - सफ़र
It may not be smooth
Struggle may be there too
Ups and downs
But they sing...
कितना हँसी है मौसम
कितना हँसी सफ़र है...
What a beautiful weather
what a pleasant journey...
And take the ups and downs
in stride
Some feel left alone
in this journey
Being alone and
feeling lonely
are two different things

A poet says
अकेला ही चला था
जानिब–ए–मंज़िल मगर
लोग साथ आते रहे
कारवाँ बनता गया
Started alone towards my destination
people joined one by one
and there was a caravan
Being alone is a fact
Loneliness is a feeling.

In times of crisis
One is down
They now call it depression
Again a matter of feeling
वक़्त ने किया, क्या हँसी सितम
तुम रहे न तुम, हम रहे न हम
The world has brought fantastic calamity
You have no more remained yourself
Nor do have I
Stability Vs change !
Buddha said
Nothing is permanent
Change is the rule
The water in river
is the example
The places change
The conditions change
The company changes
Buddha himself kept changing !
A moment does not repeat
Adapt to change
The law to survive
Journey and change
Synonyms !
In times of Chengizkhan
Armies travelled
from Mongolia to Europe
No one knew
when the journey would end
where the journey would end
Alexander the great did not know !
There were battles on way
Battles were part of journey !
Life was journey
And there was life
in the journey.

6

Old age is a curse
not for self so much
as for others...
Farmers have to grow
so the aged can survive.
The doctors have to attend
so the aged do not die.
The people have to pay taxes
so the aged are supported.
The youngsters work overtime
so the aged keep living.
The society calls them senior citizens
so the ego of the aged is respected.
And what for...
Why not be frank and honest,
accept the age as liability,
an out-of-date model,
machine, the spares of which
are no more available.
Something like scrap,
worth disposal
since,
it is not even worth
the storage cost !

7

Search for meaning
A life-long pursuit
Finding meaning
Discovering meaning
Creating meaning
Reflects zeal to live
Meanings are found
And lost
Meanings change
Meanings extend
Meanings expand
And Meanings die
Attempt is made
To find meaning
in the meaningless
But,
Is there anything
meaningless ?
Meanings lie
In the minds
Not in the matter !

Then there comes
A time when
Meanings start disappearing
A struggle to
Retain meaning
Even in the meaningless
Yes, with time
Some things
Do become meaningless
No point in search
For meaning in
The meaningless.

A time comes
When life goes on
Living with
The meaningful
And the meaningless
With no attempt
to differentiate
between the two !

सूची

विभाग 1 - हिंदी कविताएँ

1. मैं जो कह रहा हूँ 3
2. शब्द तू है, मैं नाद हूँ 4
3. हम अब ख़ुद के क़रीब आ रहे हैं 5
4. तालीम जब होती है 6
5. आदमी को सुकून कब महसूस होता है ? 7
6. दिमाग़-ओ-अक़्ल की तारीकियों से गुज़र 8
7. अँधेरों में रहने वाले 9
8. हर कली फूल बन मुरझा जाती है 10
9. उँची पहाड़ियों से लुढ़कता हुआ 11
10. इन्तज़ार था तुम्हारे आने का 12
11. कोशिशें सभी कर चुके 13
12. मंज़िल तो कोई थी ही नहीं 14
13. क़रीब हैं फिर भी फ़ासले 15
14. पैदा हुए थे, ज़िन्दगी भी गुज़र गई 16
15. अजीब बात है यारों, इस शहर में 17
16. ख़िज़ाँ में फूलों की ख़ुशबुओं को 18
17. कुछ भारतीय खेलों के बारे में 19
18. लोगों की ग़लतियाँ ठीक करते-करते 20
19. हर समय साथ चलनेवाला 21
20. अर्थ न जाने कहाँ खो गए 22
21. लोग मेरे भविष्य की बातें 23
22. किसी सही काम का हो जाना 24
23. गंगा-जमुना इतनी मैली हो गई 25
24. लोग सीखते थे जब कोई किताब नहीं थी 26

25. करते रहिए वो सब बातें 27
26. दुनिया में सुबह होती है 28
27. लोग फ़िज़ूल फ़िक्र करते हैं 29
28. कोई कहता है तरीक़े बदल गए 30
29. ख़ुशनुमा इक गीत गाओ 31
30. आज नहीं करोगे तो कब करोगे 32
31. हमने अपने-आप को क़त्ल क्यों किया 33
32. सही-ग़लत 34
33. मंज़िलों की ओर चलते 35
34. भूली हुई बातें 36
35. बात दरिया[1] के साथ 37
36. रात सोने के लिए होती है 38
37. न कारवाँ[1] है, न हमसफ़र[2] है 39
38. ज़िन्दगी में अगर गुल की 40
39. हर हाल में अपने 41
40. दुनिया में कब कोई 42
विभाग 2 - हिंदी मुक्तक 43
विभाग 3 - मराठी कविता 65
१. निरभ्र निळ्या आकाशाचं 67
२. खंत नाही, खेद नाही 68
३. केव्हा तरी अभ्यासलेल्या 69
४. सामान्य या शब्दाचा अर्थ 71
५. अनेकांनी सुचविले 73
६. अगदी सुनामी नाही तरी 75
७. व्यथा हा फक्त कथेचा विषय नसून 76
८. रंगमंच आणि मी 78
९. काय काय हरवले 79

१०. वाटाड्यांचं पीक उदंड आलंय 81
११. जगणे एक काव्य असते 82
१२. जगण्याचा दिवस आजच असतो 83
१३. भ्रमाचा भोपळा फुटला 85
१४. जरा लांबूनच दिसला 87
१५. लहानपणापासूनच 88
१६. रेशीमबंधांच्या गाठीही तुटतात 90
१७. दार वाजले तरी कोणी येईल 91
१८. धूर निघाला होता, पण 92
१९. आयुष्य गेले कसे सरून 93
२०. त्याने केलेले प्रेम ते 94
२१. नदीकाठच्या हवेलीच्या झरोख्यातून 95
२२. मी मुलखावेगळा माणूस पाहिला 96
२३. पौर्णिमा होती परि 97
२४. शायराना स्टाईल मध्ये 98
२५. माझ्यातला 'मी' काय होता 99
२६. चालता चालता दमलो होतो 100
२७. आयुष्यात 'च' चा वापर जास्त झाला 101
२८. म्हणताना म्हणतो आपण 102
२९. स्वत:च्या कर्तृत्वाबद्दल 103
३०. आपली मुलं आपली 104
३१. जागा परिचित असली तरी 105
३२. कोणाचे बूड जागचे हलत नाही 106
३३. तलावात बगळा ध्यानस्थ दिसतो 107
३४. आयुष्यात काय करायचे राहून गेले 108
३५. आताशा वाक्प्रचार वापरात नसतात 109

विभाग ४ - मराठी मुक्तक 111
विभाग 5 - इंग्रजी रचना 123
1. The human mind 125
2. Tragedy of a mind-reader 126
3. Meetings have agendas 128
4. Life runs like a time-piece 130
5. Many struggle 131
6. Old age is a curse 133
7. Search for meaning 134

वक़्त के हाथ – वक़्त के साथ

– एम. एन. पलसाने